प्रकाशन तिथि : 01 अक्टूबर, 2021
प्रेषण तिथि : 04 अक्टूबर, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 14 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

'संघ का दर्शन ही भारतीय दर्शन है'

माननीय संरक्षक श्री का गुजरात प्रवास

संघ के संरक्षक व मार्गदर्शक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर 15 से 20 सितंबर तक गुजरात प्रवास पर रहे। 15 सितंबर को आलोक आश्रम से रवाना होकर डीसा पहुंचे जहां स्थानीय स्वयंसेवकों के साथ अनौपचारिक बैठक की। तत्पश्चात मेहसाणा पहुंचकर वहां के स्वयंसेवकों से मिलकर शाम को अहमदाबाद पहुंचें। अहमदाबाद के गोता स्थित श्री हरेन्द्र सिंह सरवैया राजपूत समाज भवन में माननीय संरक्षक श्री के सान्निध्य में एक स्नेहमिलन कार्यक्रम रखा गया। हीरक जयन्ती वर्ष के उपलक्ष में आयोजित हो रहे 75 बड़े कार्यक्रमों की श्रृंखला के इस कार्यक्रम में मातृशक्ति सहित सैकड़ों समाजबंधुओं ने उपस्थित होकर संरक्षक श्री का संदेश सुना। कार्यक्रम को वरिष्ठ स्वयंसेविका जागृति बा हरदासकाबास तथा श्री राजस्थान राजपूत युवा मंच के प्रताप सिंह जोगीवाड़ा ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में श्री राजपूत पुलिस परिवार, श्री राजपूत विद्यासभा, श्री राजपूत युवा संघ, श्री राजपूत विकास ट्रस्ट, श्री बोपाल राजपूत समाज, श्री नरोडा राजपूत समाज, श्री मेघाणीनगर राजपूत समाज, श्री पश्चिम राजपूत समाज सहित अनेकों सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। 16 सितंबर को संरक्षक श्री साणंद पहुंचें जहाँ दिग्विजयसिंह पलवाड़ा के आवास पर शहर में रहने वाले स्वयंसेवकों ने सपरिवार पहुंचकर आशीर्वाद लिया। (शेष पृष्ठ 7

गोता स्नेहमिलन में माननीय संरक्षक श्री के उद्‌बोधन का संपादित अंश

'ईशावस्यमिदं सर्वं' यह पूज्य तन सिंह जी का मूल मंत्र था। वे अपनी हर बात को इसी से पुष्ट किया करते थे। जो कुछ भी हमको दिखाई देता है उस सब में ईश्वर का वास है। इन सब का त्याग करते हुए इनका सदुपयोग करना है। पति, पत्नी, पुत्र, गाड़ियां, मकान सभी कुछ ईश्वर की इच्छा से मिला है लेकिन उसको हमने अपना मान लिया, यहीं से मानवता में विकार उत्पन्न हुआ। जो हमारा नहीं है वह हमारे साथ जाने वाला नहीं है चाहे पति हो, पत्नी हो, पुत्र हो या धन हो। सभी धन ईश्वर का है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'जो कहा उसका उद्यम और उद्योग भी करें'

आप सबने कहा कि जैसा श्री प्रताप फाउंडेशन कहेगा, वैसे हम करेंगे। श्री प्रताप फाउंडेशन की बात मानेंगे, यह बहुत बड़ा निर्णय है और मैं सोचता हूं कि आपने जो कहा है उसके लिए आप उद्यम भी करेंगे, उद्योग भी करेंगे और ऐसा करेंगे तो न होने का प्रश्न ही नहीं उठता, सब होना संभव है। दो दिन से आपकी बातों को सुनकर लगता है कि आप बहुत कुछ करना चाहते हैं, मैं कहता हूं सब कुछ कर डालना चाहिए और चाहिए शब्द को भी हटा दें, करना ही है और इसके लिए करना प्रारंभ करें। आगे आगे मार्ग मिलता चला जाएगा। दीपक की रोशनी से हम कुछ कदम चलते हैं और आगे बढ़ने पर आगे का मार्ग स्वतः दिखाई देने लगता है। बस चलने का संकल्प दृढ होना चाहिए जिसे आपने विगत दो दिनों में व्यक्त किया है। दल बदलते रहते हैं पर मां बाप नहीं बदलते, कौम नहीं बदलती। हमारी इस कौम पर सदैव आक्रमण होते आये हैं, हमें नाकारा ही नहीं बल्कि सांप की औलाद तक कहा गया, कौम की यह पीड़ा हम में जागृत है, यह आप सबने अपने आप में महसूस किया है। रोग को हमने पहचान लिया है तो अब हम उससे दूरी बनाने का प्रयास करें और ऐसा किए बिना ईलाज संभव नहीं है।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

इतिहास विकृतिकरण रोकने हेतु प्रधानमंत्री को पत्र

विगत लंबे समय से राजनीतिक विचारधाराओं द्वारा जातियों के तुष्टिकरण हेतु हमारे ऐतिहासिक महापुरुषों की वंशगत पहचान को बदलने का कुत्सित प्रयास किया जा रहा है। राजनीतिक लोग पहले यह प्रयास अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न जाति संगठनों के कुछ शरारती तत्वों को आगे करके कर रहे थे और आजकल वे प्रत्यक्ष रूप से ऐसे कार्यों को प्रोत्साहित करने लगे हैं। इसी कड़ी में सम्राट मिहिरभोज प्रतिहार की पहचान को लेकर विवाद खड़ा किया जा रहा है। उत्तरप्रदेश के दादरी में वहां के मुख्यमंत्री द्वारा उद्घाटित प्रतिमा को लेकर भी ऐसा ही विवाद खड़ा हुआ और समाज ने संवैधानिक तरीकों से इसका प्रबल प्रतिकार भी किया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

वीरवर जेतसिंह जी बोड़ा का बलिदान दिवस मनाया

सिरोही प्रांत के माँडणी गाँव के ओरण में स्थित जेतसिंह जी बोड़ा के बलिदान स्थल पर श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा उनका बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। 25 सितंबर को आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास ने कहा कि आज से 200 वर्ष पूर्व जेत सिंह जी ने जन्म लिया और आज हम उन्हें इस समारोह के माध्यम से स्मरण कर रहे हैं। ऐसे महापुरुष को याद करने का औचित्य क्या है, ऐसा उन्होंने क्या किया कि हम उन्हें याद करने पर विवश हुए हैं? इन प्रश्नों पर हम विचार करेंगे तो हमें पता चलेगा कि जो व्यक्ति अपने लिए ना जी कर किसी दूसरे के लिए जिएगा, वह युग युग तक याद रखा जाएगा। (शेष पृष्ठ 4 पर)

कौन थे जेतसिंह जी... ?

जेतसिंह जी जालोर जिले के सियाणा गाँव के बोड़ा चौहान ठाकुर सुजाण सिंह जी के पुत्र थे। अपने पिताजी के स्वर्गवास के बाद विक्रम संवत् 1885 में वे सियाना के ठाकुर बने। विक्रम संवत् 1891 आसौज बदी चतुर्थी को रायपुरिया गांव (जो बाकरा गांव की जागीर का हिस्सा था) में उनके भाणेज की अवयस्कता का फायदा उठाकर लुटेरे गाँव की गायों को घेर कर ले भागे। समाचार सुनते ही जेतसिंह जी ने अपने बारह गाँव के भाईयों सहित लुटेरो का पीछा करते हुए सेऊडा (सिरोही) के पास नाड़ी पर पहुंचकर लुटेरों को रोका एवं गायों को वापस भेज दिया। (शेष पृष्ठ 7 पर)

राव जयमल जी पर डाक टिकट जारी

मात्र 8 हजार की सेना के साथ आततायी अकबर को उसकी 48 हजार की सेना सहित अपनी वीरता, रणनीति एवं नेतृत्व के बल पर महीनों तक चित्तोड़गढ़ का घेरा डाले रखने को मजबूर करने वाले एवं अंत में शाका कर अपने साथियों सहित गौरवपूर्ण बलिदान को अंगीकार करने वाले राव जयमलजी मेड़तिया की जयंती पर 17 सितंबर को भारत सरकार ने उनकी स्मृति में एक 5 रुपये का डाक टिकट जारी किया है। इसके लिए 17 सितम्बर को प्रातः 11 बजे एक वर्चुअल कार्यक्रम रखा गया। (शेष पृष्ठ 7 पर)

मिहिर भोज (जयंती विशेष, 18 अक्टूबर)

महान सम्राट मिहिरभोज (836 ई. - 885 ई.), अथवा प्रथम भोज प्रतिहार राजवंश के सबसे प्रतापी राजा हुए, जिन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी हिस्से पर लगभग 49 वर्षों तक शासन किया और इनकी राजधानी कन्नौज (वर्तमान उत्तर प्रदेश) थी। इनके राज्य का विस्तार दक्षिण में नर्मदा से लेकर उत्तर में हिमालय की तराई तक और पश्चिम में सिंध से लेकर पूर्व में वर्तमान बंगाल की सीमा तक माना जाता है। इनकी अरब आक्रमणों को रोकने में प्रमुख भूमिका रही थी। अरब इतिहासकार सुलेमानी ने उन्हें अरब आक्रांताओं का सबसे बड़ा दुश्मन बताया, मिहिर भोज ईस्वी सन् के प्रारंभ के बाद के भारत में सबसे बड़े क्षत्रिय साम्राज्य के जनक थे । इनके काल के सिक्कों पर आदिवाराह की उपाधि मिलती है, जिससे यह अनुमान लगाया जाता है कि ये विष्णु के उपासक थे।

नाम एवं उपाधि : मिहिर भोज का सबसे आम नाम भोज है। इतिहासकार सतीशचंद्र के अनुसार उन्हें उज्जैन के शासक 'भोज परमार से भिन्न दिखाने के लिए कभी-कभी मिहिर भोज भी कहा जाता है।' हालांकि, रमा शंकर त्रिपाठी ग्वालियर से प्राप्त अभिलेख के हवाले से लिखते हैं कि इसमें में उनका प्रथम नाम (अभिधान) 'मिहिर' लिखा गया है जो सूर्य का पर्यायवाची शब्द है।

शासनकाल : मिहिर भोज का शासनकाल भारतीय इतिहास के मध्यकाल का वह दौर है जिसे 'तीन साम्राज्यों के युग' के नाम से जाना जाता है। यह वह काल था जब पश्चिम-उत्तर भारत (इसमें वर्तमान पाकिस्तान के भी हिस्से शामिल हैं) क्षेत्र में प्रतिहारों का वर्चस्व था, पूर्वी भारत पर बंगाल के पाल राजाओं का आधिपत्य था और दक्कन में राष्ट्रकूट (राठौर) राजा प्रभावशाली थे। इन तीनों राज्य क्षेत्रों के आपसी टकराव का बिंदु कन्नौज पर शासन था। इतिहासकार इसे कन्नौज त्रिकोण के नाम से भी बुलाते हैं। कन्नौज उस समय भारतीय भू भाग की अनाधिकारिक राजधानी मानी जाती थी। भोज के आरंभिक समय में कन्नौज प्रतिहारों के आधिपत्य में नहीं था। अतः भोज के वास्तविक शासनकाल की शुरूआत उसकी कन्नौज विजय से मानी जाती है जो 836 ईसवी में हुई। इसके पश्चात उसने 885 ईसवी तक (49 साल) यहाँ राज्य किया। अपने पहले कार्य के रूप में उन्होंने अपनी मातृभूमि पर अपना अधिकार स्थापित किया, गुहिल, सोलंकी, जोधपुर-प्रतिहार और चौहान राजपूत वंशों के साथ गठजोड़ को और सशक्त किया और उन्हें एक सुगठित और अजेय पदानुक्रम में बदल दिया।

भोज के शासनकाल के प्राथमिक वर्षों में, सिंध के अरब गवर्नर इमरान इब्न-मूसा ने अपनी पकड़ बढ़ाने की कोशिश की। लेकिन उनके रास्ते में भोज चट्टान की तरह खड़े थे, जो अपने पूर्वज नागभट्ट प्रथम की अजेय विरासत के सच्चे वंशज थे। उन्होंने 833 और 842 ईस्वीं के बीच शक्तिशाली म्लेच्छ राजा की बड़ी सेना का मुकाबला किया और उन्हें बाहर से भगा दिया। लगातार संघर्षों के बाद मिहिर भोज ने अरबों को सिंध के प्रमुख हिस्से से बाहर निकाल दिया और केवल दो छोटी रियासतें छोड़ कर पूरे सिंध पर आधिपत्य स्थापित कर लिया। जिस सिंध को लोग बिन कासिम के बाद हिन्दुओं की पहुंच से बाहर होने का प्रचार करते हैं, उस पर अल-मसूदी के कहे अनुसार मिहिर भोज ने अपना आधिपत्य स्थापित कर दिया था, ये भारत के इतिहास में एक महान उपलब्धि थी। भोज उन हिंदुओं को हिंदू धर्म में वापस भी लेकर आये जो इस्लाम में परिवर्तित हो गए थे। अरब जो उस समय की सबसे शक्तिशाली और अति उत्साही शक्ति होने के कारण यूरोप, मध्य-पूर्व से मध्य एशिया से लेकर ईरान तक अपने रास्ते में आने वाले हर राज्य पर कब्जा कर रहे थे उसी समय मिहिर भोज ने उनको भागने के लिए मजबूर किया। शायद यही वजह थी कि उनके दुश्मन भी उनका सम्मान करते थे और इसलिए उन्हें अरबों का सबसे बड़ा दुश्मन कहा जाता था। अंत में मिहिरभोज पाल और राष्ट्रकूट (राठौरों) के साथ त्रिपक्षीय संघर्ष के विजेता बन के उभरे, जिसे इतिहासकार उनकी महानतम उपलब्धियों में से एक मानते हैं।

अंतिम समय: अपनी मृत्यु (885 ईस्वी) के समय तक इस लक्ष्मण वंशी प्रतिहार ने गुप्त और हर्षवर्धन के साम्राज्य से बड़ा साम्राज्य स्थापित कर लिया था। इसमें उत्तर भारत हिमालय से लेकर नर्मदा से थोड़ा आगे, पूर्वी पंजाब और सिंध से बंगाल तक शामिल था। दक्षिण शांत था। पाल वंश (पूर्वी उत्तर प्रदेश में आज भी पाए जाते हैं) की शक्ति क्षीण हो चुकी थी, उत्तर-पश्चिम सीमा पर अरबों का पूर्णतः दमन हो चूका था, सिंध उनसे छीन लिया गया था और प्रतिहारों का मध्यदेश अपनी शक्ति के शिखर पर था। उसके पास एक मजबूत शासक, एक सक्षम सम्राट और धर्म के संरक्षक की प्रतिष्ठा थी, जैसा कि उनके 'आदि-वराह' शीर्षक से स्पष्ट है। **- प्रमोद सिंह**

शाही प्रतिहार वंश और उनका समय

जब सातवीं शताब्दी में मध्य एशिया और मध्य-पूर्व के क्षेत्र में अरब साम्राज्यवाद अपने चरम पर था तब अरब भारतीय उपमहाद्वीप में सिंध से आगे नहीं बढ़ सके। इसका कारण था भारत में उस समय स्थापित शाही प्रतिहार राजवंश का शासन, जिन्होंने इन लूटेरे इस्लामिक आक्रमणकारियों के विरुद्ध एक अभेद्य रक्षा कवच का कार्य किया और इस क्षेत्र को शान्ति और स्थिरता प्रदान की। उनके साम्राज्य ने उत्तरी भारत के सभी राजपूत वंशों को एकजुट किया। उनके सामंतों में मेवाड़ के गुहिलोत (बाद का प्रसिद्ध सिसोदिया वंश), शाकंभरी के चौहान, जेजाकभुक्ति के चंदेल, ग्वालियर के कछवाहा, दिल्ली के तोमर और गुजरात के सोलंकी शामिल थे। फिर भी यह राजवंश हमारे इतिहास की किताबों में एक सम्मानजनक उल्लेख पाने में विफल रहा है। यह भारतीय इतिहास लेखन और पठन की सबसे बड़ी अनकही त्रासदियों में से एक है।

शाही प्रतिहार (कन्नौज के प्रतिहार) कौन थे- वंशावलियों में प्रतिहारों ने स्वयं को भगवान राम के भाई लक्ष्मण से जोड़ा है। ऐतिहासिक रूप से बात की जाये तो सबसे पहले ज्ञात प्रतिहार शासक हरिश्चंद्र हैं। 861 ई. का घटियाला अभिलेख उन्हें विप्र (उच्च कोटि का विद्वान व्यक्ति) के रूप में संदर्भित करता है। शाही प्रतिहारों की शाखा की स्थापना राजस्थान गुजरात सीमा के पास भीनमाल (आबू) के नागभट्ट प्रथम ने की थी। हमारी कुछ पाठ्यपुस्तकों में इन्हें गलत तरीके से उन्हें 'गुर्जर-प्रतिहार' के रूप में बता दिया गया है जबकि प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. एस.आर. शर्मा के अनुसार, शाही प्रतिहारों ने कभी भी स्वयं को 'गुर्जर प्रतिहारों' के रूप में ऐतिहासिक रूप से सम्बोधित या संदर्भित नहीं किया है। यद्यपि इस राजवंश की स्थापना प्राचीन 'गुर्जरा' क्षेत्र (राजस्थान और गुजरात के कुछ हिस्सों) में हुई थी, परन्तु बाद में इस राजवंश ने मध्य प्रदेश के उज्जैन और उसके बाद उत्तरप्रदेश में कन्नौज (शर्मा, शांता रानी; 'राजस्थान के शाही प्रतिहारों की उत्पत्ति और उदय' ; पृष्ठ 30) पर शासन किया। ऐतिहासिक रूप से, 'गुर्जर-प्रतिहार' वाक्यांश का प्रयोग मात्र एक बार हुआ है, परन्तु ध्यान देने योग्य बात यह है कि यह प्रयोग स्वयं शाही प्रतिहार वंश के किसी शासक द्वारा न किया जाकर उनके एक सामंत, राजोरगढ़ (अलवर, राजस्थान) के मंथनदेव द्वारा उनके एक शिलालेख में किया गया है। प्रसिद्ध इंडोलॉजिस्ट एफ किलहॉर्न और बीडी चट्टोपाध्याय ने अलवर के इस वंश की पहचान बडगुजर राजपूतों के रूप में की (एपिग्राफिया इंडिका, III, नंबर 36; एफ किलहॉर्न द्वारा 'मंथनदेव वी.एस. 1016 का राजोर शिलालेख')। प्रसिद्ध इतिहासकार और स्वतंत्रता सेनानी के.एम. मुंशी ने शाही प्रतिहारों के बारे में लिखा है, 'वे सभी गुर्जरदेश में 550 ईस्वी से 700 ईस्वी के बीच विभिन्न योद्धा कुलों से आए थे, जिसकी धुरी माउंट आबू का क्षेत्र था।' उन्होंने आगे लिखा है , 'इस वंश की महानता का प्रमाण 550 ईस्वी में हरिश्चंद्र के अधीन 'गुर्जरदेश' (आधुनिक मारवाड़) के उत्थान और उसकी आक्रामक शक्ति जो उसने 725 ईस्वी में नागभट्ट प्रथम के काल में हासिल की और अरबों को बाहर खदेड़ दिया, में खोजा जा सकता है। उनके वंशज आज भी राजपूतों के नाम से जीवित हैं।' गल्लाका शिलालेख (795 ईस्वी) बताता है कि नागभट्ट प्रथम (730-760 ईस्वी) ने भरूच के अजेय 'गुर्जर' शासकों को हराया (एपिग्राफिया इंडिका XLI, पृष्ठ 49-57)। 'गुर्जर प्रदेश' की इस विजय के बाद, उसके समकालीन शासकों ने नागभट्ट प्रथम को 'गुर्जरेश्वर' यानी गुर्जर क्षेत्र के भगवान के रूप में सम्बोधित किया। उनके भतीजे वत्सराज प्रतिहार (780-800 ईस्वी) ने इस राजवंश की राजधानी को मालवा के उज्जैन में स्थानांतरित कर दिया। गल्लाका शिलालेख भी नागभट्ट प्रथम और वत्सराजा दोनों द्वारा अरब सेनाओं को पराजित करने की पुष्टि करता है (शांता रानी, पृष्ठ 69 और 82)। राष्ट्रकूट (राठौड़) और पालों के साथ त्रिपक्षीय संघर्ष के बाद प्रतिहारों ने कन्नौज को जीत लिया और इसे अपनी राजधानी बना लिया। भोज प्रथम या मिहिरभोज प्रतिहार (836-885 ईस्वी) के अधीन प्रतिहारों का यह साम्राज्य अपने चरम पर था और उत्तर में हिमालय के तल से दक्षिण में नर्मदा नदी तक और उत्तर पश्चिम में सतलज नदी से पूर्व में बंगाल तक फैला हुआ था। 'बराह' ताम्र पत्र अभिलेख (836 ईस्वी) में भोज को 'परम भगवती भक्तो महाराजा भोजदेव' कहा गया है। अरब इतिहासकार सुलेमान (851 ईस्वी) ने मिहिरभोज प्रतिहार का वर्णन करते हुए लिखा है , 'भारत के राजकुमारों में, इस्लाम का उससे बड़ा कोई शत्रु नहीं है।' मिहिरभोज प्रतिहार ने ग्वालियर का प्रसिद्ध तेली मंदिर भी बनवाया था। दो शताब्दियों से अधिक समय तक पश्चिम के इस्लामी आक्रमणों और उत्तर-पश्चिम में गजनवियों के आक्रमणों के खिलाफ लड़ने के बाद अंततः इस वंश का पतन हुआ जिसके परिणामस्वरूप कई राजपूत राज्यों जैसे मंडोर के प्रतिहार, दिल्ली के तोमर, शाकंभरी के चौहान, पाटन के सोलंकी और चंदेलों आदि की स्वतंत्र स्थापना हुई। कन्नौज के प्रतिहार राजपूतों की आसपास के क्षेत्र में कई परवर्ती शाखाएं ग्वालियर-नरवर के परिहार, चंदेरी और 'नागोद - उंचेहरा' राजवंशों के रूप में कालान्तर में देखने को मिलती हैं। ग्वालियर पर परिहारों के शासन के प्रमाण रामदेव के 1150 ईस्वी के शिलालेख और लोहांग-देव के 1194 ईस्वी के शिलालेख (एपिग्राफिया इंडिका. XXXVIII भाग क पृष्ठ 134) में मिलते हैं। इल्तुतमिश के आक्रमण के साथ 1232 ई. में ग्वालियर प्रतिहार वंश का अंत हो गया। ग्वालियर किले के उत्तरी छोर पर स्थित जौहर कुंड किसी भी राजपूत वंश द्वारा किया गया पहला वर्णित जौहर है। चंदेरी, मालवा के परिहार राजपूत शासकों के दो शिलालेख प्रतिहारों की दूसरी शाखा के साक्षी हैं। राणा सांगा के प्रसिद्ध सेनापति मेदिनी राय, जिन्होंने अपनी सेवाओं के बदले में चंदेरी का राज हासिल किया, को इस शाखा से माना जाता है (अरविंद कुमार सिंह, 'परवर्ती प्रतिहार शासक और उनके शिलालेख', इतिहास दर्पण (2) - 2010, पृष्ठ। 60)। कन्नौज प्रतिहारों की एक तीसरी उप-शाखा ने महू (चरखारी) और महोबा के बीच खुद को स्थापित किया, बाद में उन्हें चंदेलों द्वारा पूर्व की ओर धकेल दिया गया। वीरराजदेव परिहार के अधीन इस शाखा ने 1344 में नागोद राज्य की स्थापना 'उंचेहरा' को राजधानी बना कर की। बघेलखंड में सतना जिले में यह परिहार (प्रतिहार के लिए अपभ्रंश) राज्य, 1947 तक प्रतिहार सत्ता का अंतिम अवशेष बना रहा (इतिहास, सतना जिला, शाही राजपत्र, पृष्ठ 300-301) गौर करने वाली बात यह है कि प्रतिहारों के प्राचीन शक्ति केंद्र जैसे - कन्नौज, भीनमाल, मंडोर में या तो गुज्जर आबादी बिलकुल नहीं है या केवल नाममात्र है, परन्तु यहाँ प्रतिहार राजपूतों कि बहुत अधिक संख्या है, उनके मौखिक / लिखित इतिहास में प्रतिहार गोत्र भी नहीं है। प्रतिहारों के सभी प्रमुख वंश/उपवर्ग राजपूत हैं:

(1) सिकरवार प्रतिहार - पूर्वी यूपी, बिहार। **(2)** जेठवा प्रतिहार - गुजरात। **(3)** मडाड प्रतिहार - हरियाणा । **(4)** इंदा प्रतिहार - मारवाड़ **(5)** रामावत प्रतिहार - बीकानेर । (6) खादद प्रतिहार **(7)** लुलावत प्रतिहार **(8)** देवल प्रतिहार - मारवाड़ **(9)** कल्हंस प्रतिहार - अवध। **(10)** तखी प्रतिहार - जम्मू कश्मीर शाही प्रतिहारों का शासन उस काल का स्वर्णिम काल था जिसे इतिहासकार 'राजपूत युग' कहते हैं। यह बहुत आश्चर्यजनक है कि एक वैभवशाली स्थिर हिंदू साम्राज्य इस्लामी आक्रमणों के सामने दो शताब्दियों से अधिक समय तक अस्तित्व में रहा फिर भी हमारे राजनीतिक प्रतिष्ठानों और सरकारों ने वोट बैंक की राजनीति के कारण इतिहास के साथ ऐसी कुटिल छेड़छाड़ की है कि हमारी पाठ्यपुस्तकों में शाही प्रतिहारों की भूमिका की तो बात ही दिवास्वपन लगती है।

- ब्लॉग टाईम्स ऑफ इंडिया ओपिनियन से साभार

लोहार्गल, जैला और कोटड़ा नायाणी में शिविर सम्पन्न

झुंझुनूं जिले के लोहार्गल में 16 से 19 सितंबर तक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। शिंभू सिंह आसरवा ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि संघ सनातन मूल्यों को सामाजिक जीवन में पुनः प्रतिष्ठित करने का कार्य अपनी सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली के द्वारा कर रहा है। भौतिकवाद की चकाचौंध में हम अपने स्वधर्म को भूल गए हैं जिसे संघ स्मरण करा रहा है। यह प्रेय का नहीं श्रेय का मार्ग है इसलिए त्याग और संयम जिसके जीवन में हो वही संघ के मार्ग पर चल सकता है। शिविर में चिराना, भोजनगर, बरसिंहपुरा, मंझाऊ, नारसिंघानी, बिंजासी, छापोली, टोडपुरा, उचियारड़ा, ऑडिन्ट, छिंछास आदि गांवों के युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। विदाई के पश्चात स्नेहमिलन कार्यक्रम भी रखा गया जिसमें क्षेत्र के समाजबंधुओं ने संघ के संबंध में जानकारी प्राप्त की। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की केंद्रीय टीम के सदस्य यशवर्द्धन सिंह झेरली ने फाउंडेशन के उद्देश्यों के संबंध में जानकारी प्रदान की। राघवेंद्र सिंह डूंडलोद, जगमोहन सिंह (लोहार्गल सरपंच), राजेंद्र सिंह (सरपंच चिराणा), पूर्ण सिंह (सरपंच छिलरी), मदन सिंह (सरपंच मोहनवाड़ी), गजेंद्र सिंह (पार्षद उदयपुरवाटी), मोरी सिंह चिराणा, गजेंद्र सिंह लोहार्गल, डॉ मोहन सिंह मोहनवाड़ी सहित अनेकों गणमान्य समाजबंधुओं ने कार्यक्रम में भाग लिया। जालोर संभाग के सिरोही प्रांत के जैला गांव में 16 से 19 सितंबर तक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। खुमान सिंह दुदिया ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों को समाज में तामसिक वृत्ति के विनाश व सात्विकता के सृजन की आवश्यकता के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि परंपरा, मयार्दा और संस्कार हमारी जातीय चेतना का महत्वपूर्ण अंश है। उस अंश को जीवित रखने व सबल बनाने के लिए संघ प्रयासरत है। हमारे भीतर संघ की जिस विचारधारा का बीजारोपण हुआ है उसे पनपने के लिए अनुकूलता प्रदान करने का दायित्व हमारा है। इसके लिए बार-बार संघ के शिविरों व शाखाओं में आना आवश्यक है। शिविर में जैला, मडिया, सवराटा, फलवदी, मांडानी, नवारा, तवरी, लुणोल, चेकला, सरण का खेडा आदि के युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। केशर सिंह जैला, मंगल सिंह फलवदी, अभयसिंह सवराटा, बहादुर सिंह सवराटा, कान सिंह जैला, दलपत सिंह फलवदी, भगवतसिह, नरपत सिंह, किशोर सिंह, हरि सिंह केसुआ आदि समाजबंधुओं ने व्यवस्था में सहयोग किया। गुजरात के राजकोट जिले के कोटड़ा नायाणी स्थित रामदेव पीर के मंदिर में तीन दिवसीय बालिका शिविर का आयोजन 25 से 27 सितंबर तक हुआ। जागृति बा हरदासकाबास ने शिविर का संचालन करते हुए बालिकाओं से कहा कि त्याग ही सृजन की मूल शक्ति है। जो त्याग नहीं कर सकता वह सृजन भी नहीं कर सकता। स्त्री के त्याग की क्षमता ने ही उसे महानता प्रदान की है। किसी कौम की वास्तविक निमार्ता नारियां ही होती हैं। उनके संस्कार, शिक्षा, त्याग और मूल्यों से ही किसी समाज और राष्ट्र का भाग्य तय होता है। इसीलिये संघ हमारे समाज की बालिकाओं को संस्कारित करने के लिए ऐसे शिविरों का आयोजन करता है।

जानरा में मनाया माल्हण बाई स्मृति समारोह

हीरक जयन्ती वर्ष में 75 बड़े कार्यक्रमों की श्रृंखला में जैसलमेर संभाग में माल्हण बाई का स्मृति समारोह उनकी तपोभूमि जानरा में 16 सितंबर को मनाया गया। केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि कहीं ना कहीं हम अपने धर्म से विचलित हो गए हैं। हमें पता ही नहीं कि धर्म क्या है? उस पर चलना कैसे चाहिए? धर्म कोई समझाने की, भाषण की वस्तु नहीं है, धर्म कोई व्याख्या करने की चीज नहीं बल्कि धर्म तो धारण करने की चीज है। धर्म हमारे जीवन में आना चाहिए, हमारे आचरण में परिलक्षित होना चाहिए, हमारे छोटे-छोटे कार्यों से दिखना चाहिए। धर्म हमारे जीवन में होगा तो हम नीति पर होंगे, न्याय पर होंगे, हमारा आचरण अन्य लोगों के लिए प्रेरणास्पद होगा। अन्य लोग हमें देख कर के अपना आचरण निर्धारित करेंगे। धर्म होगा तो हमारे भीतर ज्ञान होगा, हमारे अंदर सौन्दर्य होगा, हमारे अंदर वह चरित्र होगा जो हम सबका, हमारे समाज का मार्ग प्रशस्त करेगा। उसी प्रकार जैसे इतिहास पुरुषों ने, हमारे पूर्वजों ने सदियों से अपने आचरण के द्वारा मार्ग प्रशस्त किया है। वाल्मीकि रामायण में आया है कि अगर राम जैसे चरित्र के राजा नहीं हो तो कितना ही बड़ा भूखंड क्यों ना हो लेकिन वह राष्ट्र नहीं है। वहीं बंदर और भालूओं का प्रदेश भी सुसंस्कृत राष्ट्र बन जाता है यदि उनके बीच में राम निवास करते हैं। राम ने धर्म रक्षा के लिए बंदर और भालूओं का संगठन खड़ा किया। अपने लक्ष्य को उनका लक्ष्य बना दिया। किसी बलप्रयोग द्वारा नहीं बल्कि अपने आचरण के द्वारा, उनके साथ सामूहिक जीवन जीकर, उनको यह समझाकर कि यही उनका भी धर्म है। यही लोकसंग्रह है। ऐसा ही लोकसंग्रह द्वापर में श्री कृष्ण ने किया। इसी लोकसंग्रह के लिए उन्होंने अर्जुन को गीता का ज्ञान दिया। वर्तमान में संघ भी लोकसंग्रह का ही कार्य कर रहा है। संघ का प्रशिक्षण हमारे स्वधर्म को हमारे आचरण का अंग बनाने की प्रक्रिया है। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए नरसिंह चारणवाला ने कहा कि संघ गुरु के रूप में सोए हुए क्षत्रियों को जगा रहा है। हमें हमारे इतिहास की याद दिला रहा है। भवानी सिंह मुंगेरिया ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी का संदेश घर घर तक पहुंचाने के लिए संघ अपने हीरक जयन्ती वर्ष में ऐसे कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। हीर कंवर बैरसियाला ने कहा कि हम सबको संघ से जुड़ने की आवश्यकता है क्योंकि यह एक श्रेष्ठ कार्य है। उन्होंने समाज में बालिकाओं को शिक्षित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। संभागप्रमुख तारेन्द्र सिंह झिनझिनयाली ने कार्यक्रम का संचालन किया। छोटू सिंह भाटी (पूर्व विधायक), सांग सिंह भाटी (पूर्व विधायक), विक्रम सिंह नाचना (भाजपा नेता), सम प्रधान तने सिंह सोढा सहित सैकड़ों गणमान्य समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

कानेटी और पांसवाल में महिला स्नेहमिलन का आयोजन

मध्य गुजरात संभाग के कानेटी गांव में 20 सितंबर को माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास के सान्निध्य में महिला स्नेह मिलन सम्पन्न हुआ। शक्तिधाम (सुरेंद्रनगर) से जयपुर के लिए प्रस्थान करते समय संघप्रमुख श्री कानेटी में रुक कर कार्यक्रम में सम्मिलित हुए तथा उपस्थित मातृशक्ति को संबोधित करते हुए कहा कि स्त्री हो अथवा पुरुष, सभी का अंतिम लक्ष्य ईश्वर को प्राप्त करना ही है। इस लक्ष्य की प्राप्ति अपने कर्त्तव्य के पालन से ही संभव है। हमारे प्रकृति प्रदत्त गुणधर्म और स्वभाव के आधार पर ही हमारे मनीषियों ने हमारे कर्त्तव्यों का निर्धारण किया और हमारे पूर्वजों ने हर कीमत चुकाकर भी उस कर्त्तव्य के पालन की परंपरा कायम की। हम भी उन्हीं महान पूर्वजों की संतान है जिन्होंने कर्त्तव्यपालन के मार्ग में जौहर और शाका जैसी महान परंपराओं को जन्म दिया। आज हमारा समाज कर्त्तव्य से च्युत हो गया है, ऐसे में केवल मातृशक्ति ही अपने त्याग से समाज को पुनः मार्ग पर ला सकती है।

बनासकांठा प्रान्त में दांतीवाड़ा तहसील के पांसवाल स्थित गंगेश्वर महादेव मंदिर में महिला स्नेहमिलन 16 सितंबर को आयोजित हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेविका जागृति बा हरदासकाबास ने उपस्थित बालिकाओं को संबोधित करते हुए कहा कि देते हुए बताया कि एक नारी के संस्कारित होने से दो सुसंस्कृत परिवारों के निर्माण की भूमिका तैयार होती है। इसीलिए संघ बालिका शिविरों का माध्यम से समाज की बालिकाओं में भी संस्कार निर्माण का कार्य कर रहा है। निशा बा लिबोणी ने संघ का परिचय प्रस्तुत किया। मीनल बा ने बालिका शिक्षा का महत्त्व बताया। कार्यक्रम में क्षेत्र के लगभग 31 गांवों से बालिकाएं व महिलाएं उपस्थित रही।

पाबूजी राठौड़ की जयंती मनाई

16 सितंबर को विभिन्न स्थानों पर पाबूजी की जयंती मनाई गई। पाली प्रान्त के सिराणा में कार्यक्रम के दौरान बदलते दृश्य पुस्तक से 'पाबू' प्रकरण का पठन किया गया। लालसिंह सिराणा व मूमल देवड़ा ने पाबूजी के व्यक्तित्व के बारे में बताते हुए संघ की विचारधारा व कार्यप्रणाली की भी जानकारी प्रदान की। सारंगवास में भी पाबूजी राठौड़ की जयन्ती मनाई गई जिनमें स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं ने पाबूजी के स्वधर्म पालन हेतु किए गए बलिदान को स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री मल्लीनाथ राजपूत छात्रावास, बाड़मेर में भी बाबा रामदेव जी व वीरवर पाबूजी राठौड़ की जयन्ती शाखा स्तर पर मनाई गई। बीकानेर में वर्चुअल माध्यम से पाबूजी जी जयंती मनाई गई।

प्रवेश चालू सीधे 10वीं करें

उम्र बन्धन नहीं N.I.O.S. T.C. की जरूरत नहीं

कोई भी कक्षा फेल या पास किसी भी उम्र में बिना T.C. आधार कार्ड से सीधे 10वीं पास करें, 10वीं पास कर 12वीं कला, वाणिज्य, विज्ञान वर्ग में करें।

'A' ग्रेड युनिवर्सिटी से पत्राचार द्वारा घर बैठे B.A. B.Com, M.A., योगा में M.A. अच्छे अंकों से पास करें।

NIOS भारत सरकार का सबसे बड़ा सरकारी ओपन बोर्ड है।

5वीं, 8वीं पास महिला, बुजुर्ग सीधे 10वीं पास करें।

सांगसिंह राठौड़
(प्रबंधक व समन्वयक)
9783202923,
8209091787

आदर्श
सीनियर सैकण्डरी स्कूल
सोलंकियातला, तह. शेरगढ़, जोधपुर

संपादकीय

सवालों के जबाब सवालों से दें

हमारे पूर्वजों को कमतर बताने का राजनीतिक फैशन इस देश में आजादी के आंदोलन से ही चल रहा है। वाम पंथी हों चाहें दक्षिण पंथी, कांग्रेसी हों चाहें भाजपाई, प्रगतिवादी हों चाहें पुरातन पंथी सभी को संचालित करने वाला एक वर्ग विशेष सदैव यह प्रयास करता रहा है कि हमें कमतर करके पेश किया जाए और उनके प्रभाव में आ चुके अन्य वर्गों के लोग भी इसी धारा में प्रवाहित हैं और इस प्रकार की बातें करते रहते हैं जिससे सिद्ध हो कि हमने तो कुछ किया ही नहीं और इस देश में जो भी कबाड़ा हुआ वह सब हमारे कारण ही हुआ। ऐसे लोग जब हमारे से कोई सवाल करें तो सवाल का जबाब सवाल से देना प्रारंभ करें। जब तथाकथित राष्ट्रवाद के प्रवाह में बहकर कोई नागरिक हमसे यह कहता है कि इस देश में लड़ने का काम तो केवल मराठा पेशवाओं ने किया और उन्होंने ही भारत की आततायियों से रक्षा की तो उनसे सवाल करें कि शकों के समय कौनसे पेशवा थे, हुणों के समय कौनसे पेशवा थे। 18 वीं शताब्दी से पूर्व ये तथाकथित पेशवा कहां थे? शिवाजी महाराज और शंभा जी महाराज की वीरता को नमन करते हुए उनसे पूछें कि उनके बाद पनपे पेशवाओं का चरित्र क्या था? शिवाजी महाराज द्वारा वीरता पूर्वक शाईस्ता खां के महल में घुसकर उसकी अंगुलियां काट लेने की घटना पर नतमस्तक होते हुए उनसे पूछें कि क्या वे महाराजा जसवंतसिंह जी जोधपुर (राष्ट्रनायक दुर्गादास) की मौन सहमति के बिना ऐसा कर पाते? उनसे यह भी पूछें कि महाराजा जयसिंह जी यदि शिवाजी महाराज की सहायता नहीं करते तो जिस मराठा गौरव के नाम पर वे पेशवाओं की श्रेष्ठता सिद्ध कर अपनी स्वयं की प्रधानता वाली राष्ट्रवाद की फैक्ट्री चला रहे हैं उसके नायक कहां से मिलते? उनसे यह भी पूछें कि आखिर किन कारणों से औरंगजेब के परिवार में फूट डालकर उसके पुत्र अकबर को साथ लेकर औरंगजेब को परास्त करने की दुर्गादास जी की योजना परवान नहीं चढ़ पाई? उनसे यह भी पूछें कि आखिर किन षड़यंत्रों के कारण शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित मराठा साम्राज्य छिन्न भिन्न हो गया और केवल दो पीढ़ीयों तक ही वह प्रभावित रह पाया? यदि इसके बाद की मराठा शक्ति को कोई शिवाजी महाराज से जोड़ता है तो उन्हें यह भी पूछें कि क्या पेशवाओं द्वारा राजसत्ता की बंदरबांट और शिवाजी महाराज के स्वप्न में कोई अंतर नहीं है? यदि राजस्थान का कोई नागरिक अहमदशाह अब्दाली के खिलाफ पेशवाओं के युद्ध का जिक्र कर हमें कमतर सिद्ध करने वाला सवाल पूछता है तो उनसे यह भी पूछें कि आखिर क्या कारण थे कि उन पेशवाओं पर विश्वास कर कोई उनके साथ खड़ा नहीं हुआ? उनसे यह भी पूछें कि राजस्थान के राजाओं को मजबूरन अंग्रेजों से क्यों संधि करनी पड़ी? उनसे पूछें कि मेवाड़ में श्री नाथ जी के मंदिर को किसने लूटा था? उनसे यह भी पूछें की मेड़ता में अप्पा जी सिंधिया की छतरी क्यों बनी हुई है? उनसे पूछें कि राजस्थान में काली सेना किसे कहा जाता था और क्यों कहा जाता था? उनसे पूछें कि जयपुर के महाराजा को आत्महत्या क्यों करनी पड़ी? उनसे यह भी पूछें कि मेवाड़ की राजकुमारी कृष्णा कुमारी को क्यों आत्म बलिदान देना पड़ा? ऐसे ही अनेक सवाल हैं जिनके सामने उनका हमारे विरोध में पनपा वह राष्ट्रवाद निरुत्तर हो जाएगा क्योंकि दुष्प्रचार की एक सीमा होती है वह सत्य के सामने ठहर नहीं पाता। प्रकाश की अनुपस्थिति ही अंधकार है और अंधकार से प्रकाश का पता पूछेंगे तो वह मुंह ही छिपायेगा। जब कोई हमारे से पूछे कि हमने मुसलमानों से संघर्ष नहीं किया तो उनसे कुछ ऐसे उदाहरण पूछें जिसमें ऐसा हुआ हो जिसमें हम बिना संघर्ष के पीछे हट गये हों? जब कोई कहता है कि हम हार गये तो उनसे पूछें कि पीढीयां खपा कर उस आंधी को किसने रोके रखा जिसने संसार की सभी सभ्यताओं को नेस्तानाबूत कर दिया? जब हमारे पूर्वजों के पुरुषार्थ पर कोई प्रश्न उठाता है तो उनसे यह भी पूछ लीजिए कि उनके पूर्वज उस समय कहां थे? उनको प्रतिरोध करने से किसने रोका था? क्यों वे किसी आततायी को लगान देने के लिए बिना प्रतिरोध के तैयार हो गये? उनको हमारे उन पूर्वजों के साथ खड़ा रहने के लिए उन्हें किसने रोका था? आज अफगानिस्तान की क्रूर हुकुमत के सामने वहां की महिलाएं प्रतिरोध कर रही हैं, उनसे पूछें कि वे ऐसा क्यों नहीं कर पाये? हालांकि ऐसा नहीं है कि सभी जगह सहयोग नहीं मिला पर अधिसंख्य लोग 'कोउ नृप होई हमैं का हानि' की प्रवृत्ति में जी रहे थे और ऐसे ही लोग जब हमारे पूर्वजों के पुरुषार्थ पर प्रश्न उठाते हैं तो प्रश्नों के जबाब प्रश्नों से देना शुरू करें। जब मारवाड़ का कोई व्यक्ति ऐसी बात कहे तो उनसे पूछें कि जब चन्द्रसेन अकबर से संघर्ष कर रहे थे तब आपके पूर्वज किस भूमिका में थे? उन्होंने क्यों नहीं मेवाड़ की जनता की तरह अपने राजा के संघर्ष को अपना संघर्ष स्वीकार किया? क्यों स्वतंत्रता और संप्रभुता के पुजारी राव चंद्रसेन को जीवन भर अभावों में जीना पड़ा और सामान्य जीवन निर्वाह की समस्या का भी सामना करना पड़ा? ऐसे ही अनेक प्रश्न हैं जो सामने वाले को सोचने को मजबूर करेंगे कि उसकी धारणा गलत है, उसने जो पढ़ा वह गलत पढ़ा है या फिर उसकी स्वयं की नीयत ही गलत है। लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं है कि हमारे पूर्वजों से भूल नहीं हुई, हर कर्मशील व्यक्ति से भूल भी होती है और वह हमारे पुरुषार्थी पूर्वजों से भी हुई होगी। लेकिन वह कोई भी भूल हमारे लिए हीन भावना का कारण नहीं हो बल्कि प्रेरणा बने हमारे लिए, सीख बने हमारे लिए और यह समझ में आये हमारे और हमारे से प्रश्न करने वालों के कि जो कुछ करता है, उससे ही भूल होती है और ऐसी सभी भूलें नुक्ता चीनी करने के लिए नहीं होती बल्कि सीख लेने के लिए होती हैं। लेकिन जो कृतघ्न हैं उनके किसी भी विश्लेषण के कारण, उनके किसी भी आरोप के कारण हमें रक्षात्मक नहीं होना क्योंकि उनका तो लक्ष्य ही यही है कि हम रक्षात्मक होकर पीछे खिसक जायें और वे हमें पीछे धकेल कर आगे बढ़ जायें।

(पृष्ठ एक का शेष)

जो कहा... आप सब अपनी चेतना को जगायें, दो दिन में जो जागृति आई है उसे बरकरार रखें। आपने कहा कि वर्ष में एक बार या दो बार ऐसे मिलन होने चाहिए लेकिन मैं मानता हूं कि प्रतिदिन ऐसा होना चाहिए, हमारे अंदर बैठा प्रताप फाउंडेशन प्रतिदिन हमारा मार्गदर्शन करे ऐसा हमारा अभ्यास होना चाहिए। बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में 25 व 26 सितंबर को आयोजित श्री प्रताप फाउंडेशन के दो दिवसीय चिंतन शिविर में विदाई संदेश देते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि शास्त्र कहते हैं कि मनुष्य श्रेष्ठ है और मनुष्यों में क्षत्रिय श्रेष्ठ है तो वह श्रेष्ठता प्रमाणित होनी चाहिए, श्रेष्ठ लोगों का चिंतन भी श्रेष्ठ होना चाहिए और काम भी श्रेष्ठ होना चाहिए। जिसके लिए हमें जीवन मिला है यदि उसके लिए नहीं जिया तो जीवन व्यर्थ है। ईश्वर के लिए जीना, धर्म के लिए जीना और कर्तव्य के लिए जीना, तीनों एक ही है। तीनों में कोई अंतर नहीं है। हम संसार में क्यों आये यह जानने की आवश्यकता है और उसके अनुरूप पुरुषार्थ करने की आवश्यकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ उसी पुरुषार्थ को जागृत करता है और श्री क्षत्रिय युवक संघ, श्री प्रताप फाउंडेशन, श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन एक ही बात है, बस शब्दों का ही अंतर है, इस मर्म को समझने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि प्रताप फाउंडेशन बना तब हम भी घबराये थे, नया काम था, कठिनाइयां भी थी लेकिन मन में संकल्प था कि घबराने से काम नहीं चलेगा,तुम्हें कहा गया है तो करना ही पड़ेगा। वैसे ही संकल्प की आपको भी आवश्यकता है। पहले जो कठिनाइयां आईं वे फिर आ सकती हैं लेकिन संकल्प मजबूत होगा तो काम भी होगा। 25 सितंबर को प्रातः 10.30 से यह शिविर प्रारंभ हुआ जिसमें बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर, जालोर, सिरोही, पाली, नागौर, बीकानेर, सीकर, झुंझुनूं, चुरु, श्री गंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, अलवर, दौसा, धौलपुर, करौली, कोटा, बूंदी, अजमेर, भीलवाड़ा, राजसमंद, उदयपुर, डूंगरपुर, सवाईमाधोपुर जिलों से लगभग 225 उदीयमान एवं धरातल पर काम करने वाले राजनीतिक कार्यकर्ता शामिल हुए। शिविर के प्रारंभ में फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी ने इसकी स्थापना से लेकर अब तक के घटनाक्रम की एवं इसके उद्धेश्यों की जानकारी दी। इस शिविर की पृष्ठभूमि एवं विचारणीय बिंदुओं की विस्तार से जानकारी दी गई। सभी संभागियों ने अपने अपने विचार उन विचारणीय बिंदुओं पर रखे। राजनीतिक दल अनुसार अलग अलग बैठकर उनमें समाज के प्रतिनिधित्व को लेकर चर्चा की गई और आगे की योजना बनी। जिला अनुसार राजनीतिक परिस्थितियों पर विस्तार से चर्चा की एवं जिलावार काम करने की योजना बनाई गई। सभी जिलों में आगामी दिनों में जिला बैठकें करने का निर्णय किया। प्रदेश स्तर पर कांग्रेस से जुड़े राजपूतों की एक बैठक केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में करने का निर्णय हुआ। पंचायती राज एवं स्थानीय निकायों के वर्तमान जनप्रतिनिधियों का एक सम्मेलन भी प्रदेश स्तर पर आयोजित करने का निर्णय लिया गया। आगामी समय में प्रदेश स्तर पर लाखों की संख्या वाला एक कार्यक्रम करने का आग्रह भी सभी संभागीयों का रहा।

वीरवर...

जेतसिंह जी को भगवान ने क्षत्रिय कुल में जन्म दिया और उन्होंने अपने जीवन को क्षत्रिय के हित में जिया अर्थात अपने स्वयं के लिए, परिवार के लिए, जाति के लिए ना जी कर सर्व समाज के लिए जिया। अपने स्वार्थ के लिए नहीं बल्कि सारे संसार के लिए उनका जीवन था इसलिए आज उनके बलिदान स्थल पर एकत्रित होकर हम उनको स्मरण कर रहे हैं। ऐसे लोग हमारे गौरव हैं, हमारे समाज के रत्न हैं, हमारा इतिहास हैं। ऐसे ही महापुरुषों से हमारी कौम रत्नगर्भा बनी है। उसी कौम में हमें भी जन्म मिला यह हमारे लिए गौरव करने की बात है। स्वयं भगवान ने भी बार-बार इस कौम में जन्म लिया और क्षात्र धर्म के पालन द्वारा त्रस्त मानवता का कल्याण किया। क्षत्रिय कभी स्वयं के लिए, अपनी जाति अथवा समाज के लिए नहीं अपितु संसार के, प्राणी मात्र के लिए जीता है। उसी क्षत्रियत्व को जगाने के लिए पूज्य तनसिंह जी द्वारा स्थापित संघ पिछले 75 वर्षों से प्रयासरत है। संघ पूज्य तनसिंह जी की पीड़ा का साकार रूप है जो स्वधर्म से विमुख अपने समाज की पतनावस्था को देखकर उनके हृदय में जगी।

कार्यक्रम को गणपत सिंह वेरापुरा, बिशन सिंह कैलाशनगर, गोप सिंह विरोली, दिलीप सिंह माँडाणी, देवेन्द्र कँवर चाँदणा ने भी संबोधित किया। जेतसिंह के वंशज प्रदीप सिंह सियाणा ने कार्यक्रम के आयोजन के लिए संघ का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन गणपत सिंह भँवराणी ने किया। कार्यक्रम में संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी, स्थानीय सरपंच भगाराम प्रजापत, अमृत जी पूरोहित, मूल सिंह अन्दौर, जनकसिंह सियाणा, राजेन्द्र सिंह नरूका, डॉ उदयसिंह डिंगार, माँगू सिंह बावली, ईश्वर सिंह देलदर, गंगा सिंह कैलाशनगर, देरावर सिंह नारादरा, अमर सिंह सवली, राणा राम मेघवाल, लाखाराम देवासी, भलाराम सुथार सहित बोड़ा पट्टे व आसपास के कई गाँवो से सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

सांकड़ा गांव की प्रतिभाओं का हुआ सम्मान

जैसलमेर के सांकड़ा गांव के सहयोगियों ने अपने गांव व निकट के गांवों की प्रतिभाओं का 19 सितंबर को गांव स्थित मल्लीनाथ मंदिर के प्रांगण में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के नाम से सम्मान समारोह आयोजित किया। इस समारोह सज्जनसिंह सांकड़ा(RPS), देरावरसिंह सांकड़ा (RAS), अशोक कुमार मेघवाल (RTS) के साथ साथ डा. शिवलाल सिंह, डा. हितेंद्र सिंह, डा. मनोहर खां, डा. पुरुषोत्तम माली, डा. प्रियंका कंवर, कृषि अधिकारी छुगसिंह, इंजीनियर रौनक कंवर, व्याख्याता कमल सिंह सहित लगभग 30 प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। इस अवसर पर सांकड़ा गांव व आस पास के गांवों से लगभग 500 विद्यार्थी उपस्थित रहे जिन्होंने अपने ही परिवेश से निकली इन प्रतिभाओं से प्रेरणा प्राप्त की। विद्यार्थियों के साथ साथ उनके अभिभावक व अन्य गणमान्य लोग भी इस अवसर पर उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उपखंड अधिकारी शिव महावीर सिंह जोधा व उपखंड अधिकारी शेरगढ़ श्रीमती पुष्पा कंवर सिसोदिया भी उपस्थित रहीं। उपस्थित विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को संबोधित करते हुए महावीर सिंह जोधा ने अभिभावकों से अपने बच्चों की पढ़ाई में निवेश करने का आग्रह किया एवं सामाजिक रूढियों में किए जा रहे खर्चों को बच्चों के भविष्य निर्माण में खर्च करने का आग्रह किया। विद्यार्थियों से संकल्प पूर्वक तैयारी करने का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि आर ए एस का वर्तमान पाठ्यक्रम ऐसा है कि उसकी तैयारी करने पर अन्य सरकारी नौकरियों की तैयारी स्वतः ही हो जाती है। पुष्पा कंवर जी सिसोदिया ने विशेष रूप से बालिकाओं को संबोधित करते हुए कहा कि आप ज्यों ज्यों पढ रही हैं आपकी जिम्मेदारी उतनी ही अधिक बढ़ जाती है। आप जब पढ़ने जाती हैं या नौकरी करने जाती हैं तो आप पर दोहरा दायित्व होता है और उस दायित्व को सदैव याद रखेंगी तब ही हमारा आगे बढ़ना सार्थक होगा। व्यक्ति पद से नहीं बल्कि चरित्र से बड़ा होता है इसलिए चरित्र निर्माण पहली आवश्यकता है। नवनियुक्त RPS सज्जन सिंह ने बताया कि आपके आस पास लोग कौन रहते हैं, उनका दृष्टिकोण कैसा है उससे आपकी अपने लक्ष्य के प्रति तैयारी निर्धारित होती है। लेखाधिकारी देरावरसिंह ने अपने अनुभव बताते हुए निरंतर कर्मशील रहने की बात कही। RTS अशोक कुमार मेघवाल, कृषि विकास अधिकारी छुग सिंह, कुलवीर सिंह आदि ने भी अपने अनुभव साझा किए। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की चर्चा करते हुए कहा गया कि सम्मानित होने वाली प्रतिभाओं को सोचना चाहिए कि उनकी सफलता का कारण केवल उनका प्रयास ही नहीं बल्कि समाज की विभिन्न चेष्टाएं भी हैं और आज का यह कार्यक्रम भी ऐसी ही एक चेष्टा है इसलिए आपकी इस सफलता का भागीदार समाज भी है। हमें क्या बनना है इसके साथ साथ हमारे सामने यह प्रश्न भी खड़ा होना चाहिए कि क्यों बनना है? इस प्रश्न का जबाव जाने बिना हमारा बनना सार्थक नहीं है और श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी प्रश्न का उत्तर खोजना सिखाता है। प्रारंभ में संभाग प्रमुख तारेन्द्र सिंह झिंझनियाली ने कार्यक्रम की भूमिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन मैराजसिंह सांकड़ा ने किया। कार्यक्रम में पूर्व विधायक शैतानसिंह, संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक गणपतसिंह अवाय, सांकड़ा प्रधान भगवतसिंह, सांकड़ा सरपंच उषाकंवर आदि अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

उदयपुर व राजसमंद की कार्यविस्तार बैठक

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के कार्य विस्तार के क्रम में 16 सितंबर को राजसमंद जिले की बैठक रामेश्वर महादेव मंदिर राजसमंद में रखी गई। बैठक में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की विस्तार से जानकारी दी गई एवं बताया गया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य सदियों तक चलने वाला कार्य है, यह समाज के जीवन में परिवर्तन का कार्य है और संघ ने उसका आधार बनाया है व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन को। समाज का जीवन व्यक्ति के जीवन से बहुत अधिक लंबा होता है इसलिए उसमें आधारभूत परिवर्तन की गति और हमारी आकलन क्षमता में सामंजस्य नहीं हो पाता क्यों कि हम व्यक्ति के जीवन के किसी एक कालखंड के परिवर्तन से समाज के दीर्घ जीवन के परिवर्तन की तुलना करते हैं और इसीलिए हम ऐसे दीर्घसूत्री कार्यों का सही आकलन नहीं कर पाते। इसलिए हम संघ को भी यदि स्वयं अपने जीवन में अवतरित किए बिना समझने का प्रयास करते हैं तो असफल होते हैं और मिथ्या धारणाएं पाल लेते हैं। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन का मुख्य कार्य हमारी ऐसी धारणाओं को दूर कर हमें संघ को समझने के लिए प्रेरित करना है। फाउंडेशन हमारे समाज की सकारात्मक शक्ति को संगठित कर समाजोपयोगी करने को प्रयत्नशील है और इसीलिए ऐसी बैठकों के माध्यम से ऐसे सकारात्मक लोगों को ढूंढने और उनसे संपर्क बढ़ाने का प्रयास कर रहा है। ऐसे लोगों को छोटे छोटे कामों के माध्यम से सक्रिय करने का प्रयास कर रहा है और उसके परिणाम स्वरूप समाज में फैल रही सकारात्मक जागरुकता से परिचित करवा रहा है। फाउंडेशन हमारी न्यूनतम ऊर्जा से अधिकतम प्राप्त करने में विश्वास करता है और इसके लिए समाज के सामने विकल्प उपलब्ध करवाता है। विगत ढाई वर्षों में अनेक लोगों ने फाउंडेशन की इस मुहीम में सहयोग किया है और स्वयं में तथा समाज में सकारात्मक ऊर्जा के प्रवाह को महसूस किया है। बैठक में मेवाड़ वागड़ संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला राजसमंद प्रांत प्रमुख फतेहसिंह भटवाड़ा सहित उपस्थित रहे। बैठक का संचालन मेवाड़ मालवा संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा ने किया। राजसमंद में विकास अधिकारी के पद पर कार्यरत भुवनेश्वर सिंह माताजीका गुड़ा ने भी बैठक को संबोधित किया एवं व्यवस्था की तकनीकों के समयानुकूल उपयोग की आवश्यकता जताई। राजसमंद की बैठक के बाद उदयपुर के बी एन संस्थान में उदयपुर के सहयोगियों की बैठक रखी गई जिसमें उदयपुर जिले में संभावित कार्यों की चर्चा की गई। तहसील व कोलोनी वार बैठकें करने का निर्णय किया गया। सभी सहयोगियों ने जिले में प्रतिमाह एक कार्यक्रम के किया जाना निर्धारित किया एवं केन्द्रीय स्तर से मिलने वाले कार्यक्रमों में नियमित सहयोग की योजना भी बनाई गई।

वीर पनराज जी जयन्ती कार्यक्रम की तैयारियां

श्री क्षत्रिय युवक संघ संभाग जैसलमेर द्वारा हीरक जयंती वर्ष 2020-21 के उपलक्ष्य में गौ रक्षक श्री वीर पनराज जी जयंती कार्यक्रम आगामी 10 अक्टूबर 2021 को पनराजसर में मनाई जाएगी। इसके लिए संघ कार्यालय 'तनाश्रम' में 21 सितंबर को पोस्टर का विमोचन किया गया जिसमें संभाग प्रमुख तारेंद्र सिंह जिजनियाली, वरिष्ठ स्वंयसेवक गंगा सिंह तेजमालता, प्रान्त प्रमुख बाबू सिंह बैरसियाला, पूर्व विधायक छोटू सिंह भाटी, जिला प्रमुख प्रताप सिंह रामगढ समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त जयन्ती के प्रचार-प्रसार हेतु रामगढ़, राघवा, सेऊवा, रायमला, साधना, नगो की ढाणी, नगा, तेजपाला, सुल्ताना, अर्जुना, पनजासर आदि गांवों में संपर्क यात्रा भी की गई।

Mobile : 95497-77775, 87428-13538, 98288-34449
जय श्री
बॉयज हॉस्टल
BEST FOR 8th, 9th, 10th, 11th, 12th, Science Blo, Maths, IIT, NEET, JEE, Foundation, Target
CLC के पास, पिपराली रोड, सीकर
ALLEN के पीछे, शरदलता हॉस्पिटल के पास, पिपराली रोड, सीकर

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

शाखा अमृत

12 सितम्बर की रविवारीय शाखा में पूज्य तनसिंह जी की डायरी के अवतरण संख्या 185 पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने बताया कि साधना मार्ग में विपरीत परिस्थितियां आयेंगी, संकट आयेंगे और हमारे अन्य उत्तरदायित्व भी आड़े आयेंगे लेकिन एक स्वयंसेवक के रूप में हमें इन कठिन परिस्थितियों में भी हँसते हुए निरन्तर आगे बढ़ना है। जो जीवनभर संकट आने पर भी अपने कर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्त्व को निभाता रहे, ऐसा आदर्श स्वयंसेवक हमें बनना है। असफलता मिलने पर भी निष्काम भाव से दायित्व निभाने वाला बनना है। सफलता या जीत मिलने पर भी सामान्य व्यवहार करते हुए कर्मरत रहने वाला बनना है। संकट में हमें वीरतापूर्वक, गम्भीर होकर, परमेश्वर के प्रति अनन्त विश्वास वाली सत्ता को अर्जित करना चाहिए। ऐसी सत्ता के सामने सर्वशक्तिमान परमेश्वर को भी हारने की इच्छा होती है। ऐसा विश्वास जीवित, सजग एवं ज्ञानी भी होता है ठीक उस प्रेम की तरह जो पवित्र, उज्ज्वल और उद्दात होता है। परमेश्वर भी हमारी कर्तव्यनिष्ठा से प्रसन्न होकर हमारे कष्टों को दूर कर मार्ग को सुगम बनाते हैं। अपने कर्तव्य के प्रति, अपने ध्येय के प्रति, अपने नेतृत्व के प्रति जिसने ऐसा अनन्त विश्वास पा लिया है उसने कुछ भी नहीं खोया है। समर्पण एवं विश्वास पूर्ण ऐसा जीवन स्तुत्य है। आगे स्वयंसेवकों के प्रश्नो के उत्तर देते हुए उन्होंने बताया कि मनुष्य जीवन तभी सार्थक है जब हमें हमारे ध्येय का ज्ञान हो और उस मार्ग पर बढ़ते हुए परमेश्वर की प्राप्ति हो। संघ मार्ग पर बढ़ते हुए क्षात्र धर्म का पालन करना ईश्वर प्राप्ति का सहज सरल मार्ग है। अगले जन्म में यात्रा वहीं से शुरू होगी जहां इस जन्म में रूकेगी। हमें न्यूनतम आवश्यकताओं में जीना आना चाहिए। संघ का मार्ग सामूहिक साधना का मार्ग है जिस पर निष्काम भाव से एकाग्रता से बढ़ते-बढ़ते लक्ष्य की प्राप्ति होगी। ईश्वर सदैव उनकी ही मदद करता है जो ध्येयनिष्ठ होकर उसकी ओर बढ़ता है। इसी प्रकार 19 सितम्बर को डायरी के अवतरण संख्या 191 पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि इस अवतरण में हमारे जीवन में जिन अवगुणों ने जड़े जमा रखी हैं उनका वर्णन आया है। हम अपनी वाणी, भाषा एवं कुछ कर्मों द्वारा एक कमजोर विश्वास जताने का प्रयास करते हैं लेकिन अविश्वास हमारी जड़ों में गहरा घुसा हुआ है। साधना द्वारा ही हम ऐसे अवगुणों को मिटा सकते है। अविश्वास के कारण हमें अपनो से ही खतरा महसूस होता है और जब हमें परमेश्वर में पूरा विश्वास होगा तभी प्रत्येक प्राणी में परमेश्वर का रूप दिखेगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य ईश्वर की आराधना है, ईश्वर का दिया हुआ कार्य है लेकिन अविश्वास के कारण हम साधना मार्ग पर प्रगति नहीं कर पाते हैं एवं विकास की ओर नहीं बढ़ पाते हैं। आगे प्रश्नोत्तर के दौरान उन्होंने कहा कि जब आपस में अविश्वास होगा तो मन-मुटाव होगा ही एवं उसका सीधा असर हमारी साधना पर पड़ता है। लगातार सम्पर्क द्वारा ही इसका समाधान किया जा सकता है। जब तक परस्पर विश्वास नहीं होगा तब तक पारिवारिक भाव पैदा नहीं होगा। स्वयं के जीवन में निखार लाकर ही विश्वास बनाया जा सकता है। जिसने ईश्वर में दृढ़ विश्वास पैदा कर लिया वो दूसरों में भी आस्था रख सकता है। अविश्वास का मूल कारण परमेश्वर पर विश्वास ना होना है। साप्ताहिक अर्थबोध शाखा में 16 सितम्बर को पूज्य तनसिंह जी रचित सहगीत 'तू मेरी आँख का पानी है' पर चर्चा करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह जी धोलेरा ने बताया कि अपने प्रिय का सदैव गुण ही देखा जाता है यद्यपि साधना मार्ग में साधक की प्रगति हेतु गुरु उसके दोष जरूर बताता है। पूज्य श्री साधक को अपनी पीड़ा का कारण बताते हुए कहते हैं कि तुम अज्ञानी एवं नादान हो लेकिन फिर भी मेरे अपने हो परन्तु सदा मेरे अपने रहोगे या नहीं, यह नहीं कहा जा सकता। साधक! तुम स्वयं इस मार्ग पर आए हो और इसको छोड़कर कहीं जा भी नहीं सकते क्योंकि अब अन्य मार्ग तुम्हें अच्छा नहीं लगेगा। इस मार्ग पर आकर तुमने मुझे यह विश्वास दिलाया है कि तुम ही मेरे सपनों को साकार करने वाले बनोगे। तुमने मेरे जिस स्वप्न को बीज बनाकर अपने अन्दर रोपा है वही पौधा बनकर समाज में काम कर रहा है। यदि उसका विकास रूकेगा तो मुझसे सहन नहीं होगा। यह युगों-युगों की प्रीत है जो नष्ट नहीं हो सकती। मुझे छोड़कर तुम इस भौतिकवादी व स्वार्थी संसार में किसे अपना कहोगे? मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि तुम जीवन भर मेरे साथ रहो या अन्य उत्तरदायित्वों के निर्वहन के लिए मेरे से दूर रहो पर तुम मुझे और मेरी पीड़ा, मेरे इस मार्ग को भूल नहीं सकते। ऐसे साधक को पाकर में कितना भाग्यवान हूं। गीत के अंत में पूज्य श्री समाजरूपी मां से अपनी देरी के लिए क्षमा मांगते हुए कहते है कि संघ रूपी इस हार को स्वीकार करो क्योंकि स्वयंसेवकों रूपी मोतियों को पिरोकर संघ रूपी हार जो मैंने समर्पित किया है उससे श्रेष्ठ भेंट मैं ला नहीं सकता। 23 सितंबर को पूज्य श्री रचित 'खोये हैं प्रश्न' सहगीत का अर्थबोध करते हुए उन्होंने बताया कि श्रीमद्भगवद्गीता में अर्जुन ने कई प्रश्न पूछे और श्रीकृष्ण ने उनके उत्तर दिए। प्रश्न पूछने वाला जिज्ञासु होता है जानने की इच्छा वाला होता है और उत्तर देने का वही अधिकारी है जो अपने विषय का ज्ञानी व निष्णात हो। साथ ही प्रश्न पूछने वाले की उत्तर देने वाले के प्रति श्रद्धा होना भी आवश्यक है। पूज्य श्री तन सिंह जी परमतत्व प्राप्त महात्मा थे इसीलिए उनके लिए कोई भी प्रश्न उलझन नहीं था। ऐसे महापुरुष का जीवन तो स्वयं अन्यों के प्रश्नों का समाधान बन जाता है। प्रत्येक महापुरुष के जीवन में अनेकों कष्ट आते हैं किंतु वे उन्हें कष्ट ना मानकर ईश्वर की कृपा मानते हैं। वह केवल अपने ध्येय के प्रति समर्पित रहते हैं और मार्ग में आने वाली बाधाओं को भी प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करते हैं। महापुरुषों के सामने उनका लक्ष्य स्पष्ट होता है इसीलिए अन्यों की बातें अथवा ज्ञान उन्हें अपने पथ से विचलित नहीं कर सकता। ऐसे महापुरुष अपनी बात शब्दों से नहीं अपने कर्मों से समझाते हैं और जिनको ऐसे महापुरुषों का सानिध्य मिलता है वे सौभाग्यशाली होते हैं। हमें भी तनसिंह जी का सान्निध्य संघ के रूप में मिला है जिसका सदुपयोग करके हमें अपने जीवन को सार्थक करना है।

विभिन्न स्थानों पर स्नेहमिलन व बैठकों का आयोजन

गुजरात में बनासकांठा प्रान्त में अमीरगढ़ स्थित ईशवाणी माताजी मन्दिर में 26 सितंबर को स्नेहमिलन कार्यक्रम का आयोजन हुआ। राम सिंह धोता सकलाणा ने उपस्थित समाजबंधुओं को संघ का परिचय दिया। यशवंत सिंह कोदराम ने पूज्य तनसिंह जी का परिचय प्रस्तुत किया व बलवंत सिंह जी फतेपुरा ने हीरक जयन्ती के सम्बंध में जानकारी दी। कार्यक्रम में किडोतर, आवाल, डाभेला, सरोत्रा आदि गांवों से समाजबंधु सम्मिलित हुए। प्रान्त के वाघासण स्थित सरस्वती विद्या मंदिर में भी 25 सितंबर को एक बैठक का आयोजन हुआ जिसमें वाघासण में आयोजित होने वाले बालिका शिविर पर चर्चा हुई। शिविर स्थान के चयन पर चर्चा के साथ शिविर में बालिकाओं की उपस्थिति हेतु संपर्क की योजना भी बनाई गई। बालिकाओं की नई शाखाएं प्रारम्भ करने पर भी चर्चा हुई। प्रांतप्रमुख अजीतसिंह कुणघेर, गुमान सिंह माडका, सिद्धराज सिंह पीलूड़ा, डॉ. प्रवीण सिंह वलादर व थान सिंह लोरवाड़ा समाजबंधुओं सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। दौसा प्रान्त के लांका गांव में पृथ्वीराज शाखा द्वारा 23 सितंबर को स्नेहमिलन का आयोजन किया गया जिसमें शाखा के स्वयंसेवकों द्वारा समाजबन्धुओं को संघ की विचारधारा व कार्यप्रणाली के संबंध में जानकारी प्रदान की गई। दातार सिंह व अजयराज सिंह बाढ़ मोहचिंगपुरा ने अपने विचार रखें। एक अन्य कार्यक्रम में पृथ्वीराज शाखा द्वारा नवनिर्वाचित जनप्रतिनिधियों का स्वागत भी किया गया। मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले में पिपल्या मंडी में 19 सितंबर को स्नेहमिलन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। जिला राजपूत समाज मंदसौर के जिलाध्यक्ष महेन्द्र सिंह फतेहगढ़, कृष्णपाल सिंह मुन्देड़ी, गुमान सिंह वालाई, योगेन्द्र सिंह कन्थार, मान सिंह सोनी, दिलीप सिंह डाबी, फौजी सामन्त सिंह बरखेड़ा, जयसिंह, ईश्वर सिंह अध्यापक देवरिया आदि ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन दयाल सिंह सेदरा ने किया। बैठक में आगामी कार्यक्रम व शिविर संबंधी चर्चा कर निर्णय लिया गया कि 24 से 27 दिसम्बर 2021 तक मल्हारगढ़ तहसील मे एक बालिका शिविर तथा 28 से 31 दिसम्बर 2021 तक राजपूत सभा भवन बाबा रामदेव मन्दिर परिसर कचनारा मे एक बालक शिविर का आयोजन किया जाएगा।

प्रो. योगेश सिंह तोमर बने डी यु के कुलपति

प्रो. योगेश सिंह तोमर गांव बदरखा सीरवास खंड पाहसु तहसील शिकारपुर जिला बुलंदशहर उत्तरप्रदेश को दिल्ली विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया गया है। इससे पहले भी वे विभिन्न शिक्षण संस्थानों में सेवाएं दे चुके हैं। प्रो. योगेश सिंह ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कुरुक्षेत्र से एमटेक (इलेक्ट्रानिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग) और पीएचडी (कंप्यूटर इंजीनियरिंग) की है। साफ्टवेयर इंजीनियरिंग के क्षेत्र में उन्होंने 23 पीएचडी का पर्यवेक्षण किया है। अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय पत्रिकाओं में इनके 250 से अधिक शोध आदि प्रकाशित हो चुके हैं।

थावला के चन्द्रशेखर बने सी ए

संघ के स्वयंसेवक एवं थावला के पूर्व सरपंच दातार सिंह थावला के सुपौत्र एवं दिलीप सिंह थावला के पुत्र चन्द्रशेखर सिंह थावला सी ए फाईनल परीक्षा पास कर सी ए बने हैं।

एयर मार्शल संदीप सिंह होंगे वायुसेना के उप प्रमुख

भारत सरकार ने एयर मार्शल संदीप सिंह तोमर को भारतीय वायु सेना के अगले उपप्रमुख के रूप में नियुक्त करने का फैसला लिया है। वे आगामी 30 सितंबर को यह दायित्व संभालेंगे। एयर मार्शल संदीप सिंह फिलहाल साउथ वेस्टर्न एयर कमांड के एयर ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ हैं।

जयंत की यूपीएससी की सिविल सेवा परीक्षा 59वीं रैंक

जयंत सिंह राठौड़ ने 22 साल की उम्र में यूपीएससी की सिविल सेवा परीक्षा [IAS] में 59 वीं रैंक प्राप्त कर हम सब को गौरवान्वित किया है। सरदारशहर के पूर्व प्रधान भीखम सिंह राजासर बीकान के सुपौत्र और भंवरसिंह राठौड़ के पुत्र जयंत को ढेरों बधाई और शुभकामनाएं।

महेंद्रसिंह छायण साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए चयनित

भारत सरकार की केन्द्रीय साहित्य अकादमी ने राजस्थानी भाषा के युवा साहित्यकार पुरस्कार के लिए संघ के स्वयंसेवक महेन्द्रसिंह छायण का चयन किया है। यह पुरस्कार इन्हें इनकी कृति 'इण धरती रा उजला आंगण' नामक कृति के लिए दिया जा रहा है।

(पृष्ठ एक का शेष)

गीता...

उसे अपना मानना हमारी मौलिक भूल है। उपनिषद जितने लिखे गए हैं, संत लोगों का कहना है कि ये सारे उपनिषद क्षत्रियों ने लिखे थे। जो ऐसे ज्ञान का संग्रह करके संसार में बांटा करते थे उनकी संतान हम क्या उनके मार्ग पर चल रहे हैं? संसार में कुकर्म कब नहीं हुए, अनाचार कब नहीं हुआ लेकिन जो रक्षण का कार्य किया है, वह क्षत्रियों ने ही किया। हमारा क्या दायित्व है, यह हमें समझना होगा और उसके लिए आवश्यक है कि हम यह समझें कि क्षत्रिय कौन है? 'क्षतात त्रायते इति क्षत्रिय', जो धर्म को बचाता है, धरती को बचाता है, सत्य को बचाता है, क्षय से बचाता है, संसार को टूटने से बचाता है, प्रकाश को बचाता है, वह क्षत्रिय है। हमारे पूर्वजों ने हमको जो ज्ञान दिया उसका हम पर ऋण है। हमने उससे उऋण होने के लिए क्या किया यह विचार करने की बात है। क्षत्रियों को राजन्य वर्ग कहा जाता था क्योंकि किसी न किसी रूप में हम राज्य व्यवस्था के अंग होते थे लेकिन आजादी के समय हमारी क्या स्थिति थी? हमारे राजाओं का जो दायित्व था उसे निभाने में वे सक्षम नहीं थे। स्वधर्म की, कर्त्तव्य की शिक्षा समाज को देने वाला कोई नहीं था। शिक्षा कभी भी राजकीय उपक्रम नहीं रहा किंतु आज शिक्षा पर राजकीय नियंत्रण हो गया है और जो शिक्षक है, वह शिक्षित होते हुए भी अशिक्षित है। लॉर्ड मैकाले ने भारतीयों को नौकर बनाने के लिए शिक्षा का वर्तमान स्वरूप तैयार किया था। वही शिक्षा आज भी हमें दी जा रही है। भगवान ने गीता में कहा है कि मैं प्रकृति के गर्भ में बीज रूप में स्वयं को प्रकट करता हूं इसका अर्थ यही है कि सभी कुछ भगवान का ही है लेकिन संस्कारों की बात तब तक नहीं आती, शिक्षा की बात तब तक नहीं आती जब तक माता और पिता दोनों के यह सारी बातें स्पष्ट ना हो। संस्कार जितना माता बच्चे को दे सकती है उतना पिता नहीं दे सकता। महाभारत में अर्जुन ने सुभद्रा को चक्रव्यूह भेदन की विधा बताउ और जब उससे निकलने की विधा बता रहे थे तब सुभद्रा को नींद आ गई। इससे अभिमन्यु चक्रव्यूह भेदन का ज्ञान तो जान गया परंतु उससे निकलना नहीं सीख सका। माता की एक छोटी सी भूल इतना बड़ा नुकसान कर देती है इसलिए माता पर अधिक दायित्व है। इसी बात को समझकर 1995 से संघ में महिलाओं के, बालिकाओं के शिविर लगने प्रारंभ हुए ताकि समाज की बालिकाओं को भी संस्कारित किया जा सके। इसका प्रभाव हुआ कि अन्य सामाजिक संस्थाएं भी महिलाओं को आगे लाने का कार्य करने लगी। विकास के लिए आवश्यक है कि हमारे भीतर जो गुण हैं उनका हम विकास करें और जो दुर्गुण हैं उनको मिटाने का प्रयास करें। किंतु आज की जो शिक्षण व्यवस्था है उसमें इस प्रकार कोई प्रशिक्षण नहीं है। उसी कमी को पूरा करने के लिए संघ ने पूरे समाज को शिक्षित और संस्कारित करने का बीड़ा उठाया है। 75 वर्षों से संघ कार्य कर रहा है लेकिन अभी भी यह नहीं कहा जा सकता कि हम सफल हो गए हैं क्योंकि मनुष्य का निर्माण अत्यंत कठिन प्रक्रिया है। संसार के दूषित वातावरण का भी हम पर प्रभाव रहता है ऐसे में यह कार्य और भी कठिन हो जाता है। हमारे संस्कारों पर जो धूल पड़ गई हैं उसे दूर करना है तभी हमारा उज्ज्वल चरित्र निखर कर सामने आ सकेगा। इसके लिए संगठन की आवश्यकता है और संगठन उन्हीं का हो सकता है जिनका एक लक्ष्य हो, एक मार्ग हो, एक ध्वज हो, एक सा विचार हो और एक ही नेता हो। ऐसे संगठन के निर्माण के लिए हमें निष्ठा पूर्वक सदप्रयत्न के साथ लग जाना चाहिए।

इतिहास...

इसी कड़ी में श्री प्रताप फाउंडेशन द्वारा माननीय प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर ऐतराज जताया गया एवं उत्तरप्रदेश, हरियाणा व गुजरात के मुख्यमंत्रियों के साथ साथ केन्द्रीय मंत्रीमंडल के राजपूत सदस्यों को भी इसकी प्रति भेजी गई। इस पत्र की हजारों प्रतियां सहयोगियों द्वारा उपरोक्त सभी को मेल कर ऐतराज जताया गया।

कौन थे..

यहाँ उनके दो साथी भी युद्ध में काम आ गये। लुटेरों का पीछा करते हुए माँडाणी गांव के निकट पहुंचे जहां धोखे से लुटेरों ने उन पर वार किया और वे वीरगति को प्राप्त हुए। आपके जोड़ायत स्वरूप कंवर जो उस समय अपने पीहर लोहियाणागढ़ (वर्तमान जसवंतपुर) में थे, सियाणा पहुंचकर जेतसिंह जी के साथ सती हुए। तभी से सियाणा सहित जालोर-सिरोही के कई गाँवों में आप जेतजी दाता के नाम से जाने व पूजे जाते हैं।

राव जयमल...

जिसमें केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, केन्द्रीय संचार राज्य मंत्री, पंजाब के पूर्व राज्यपाल वी पी सिंह बदनौर, जोधपुर के पूर्व महाराजा गजसिंह, चित्तोड़गढ़ के सांसद सी पी जोशी सहित अनेक जनप्रपतिनिधि व सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि शामिल हुए। डाक विभाग द्वारा महापुरुषों की स्मृति में इस प्रकार के टिकट जारी किए जाते हैं जो एक ही बार सीमित संख्या में जारी किए जाते हैं और संग्रहणीय होते हैं और डाक विभाग के इतिहास का हिस्सा बन जाते हैं। इस अवसर पर विभाग द्वारा एक फोल्डर भी जारी किया गया जिसमें जयमल जी के इतिहास के बारे में जानकारी दी गई है। उल्लेखनीय है कि जयमल जी मेड़ता के शासक थे और मालदेव जी के बार बार आक्रमण के कारण दोनों ओर अपने ही वंश के विनाश से दुःखी होकर मेड़ता छोड़कर मेवाड़ चले गये थे। 1567 में चित्तोड़गढ़ पर अकबर के आक्रमण के समय महाराणा उदयसिंह जी को परिवार सहित सुरक्षित उदयपुर भेज दिया गया एवं किले की रक्षा का दायित्व जयमल जी मेड़तिया को सौंपा गया। महीनों तक संघर्ष के बाद 1568 में जौहर व शाका किया गया। शाके का नेतृत्व जयमल जी व उनके बहनोई फत्ता जी द्वारा किया गया एवं जौहर का नेतृत्व फत्ता जी की पत्नी व जयमल जी की बहिन फूलकंवर द्वारा किया गया। घायल होने के कारण जयमलजी घोड़े पर नहीं बैठ पाये इसलिए वे कल्लाजी राठौड़ के कंधों पर बैठकर लड़े थे। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की सायंकालीन शाखा में भी जयंती मनाई गई।

संघ का दर्शन...

वहां से रवाना होकर 16 की शाम को सुरेंद्रनगर स्थित शक्तिधाम कार्यालय पहुंचे तथा 19 सितंबर तक वहां प्रवास किया। 19 सितंबर को गुजरात के स्वयंसेवकों की बैठक शक्तिधाम में आयोजित हुई जिसे संबोधित करते हुए माननीय संरक्षक श्री ने कहा कि आपके और हमारे मिलन के दौरान अनेकों बार आपको डांटा है, फटकारा है,

ललकारा है। मैं जब अपने आप को देखता हूं तो अनुभव होता है कि मुझे भी इसी तरह डांटा और फटकारा गया तभी मैं जो आज हूँ, वह बन सका। पूज्य तन सिंह जी के सानिध्य में रहते हुए बहुत सी गलतियां मैंने की, जैसी आप करते हैं। गलती करने पर जो शिक्षक, माता-पिता बच्चों को नहीं फटकारते हैं, वे नासमझ हैं। आधुनिक शिक्षा कुछ भी कहे, किंतु बच्चों के लिए फटकार भी आवश्यक हैं। हमारे अग्रजों की फटकार को प्रसाद मानकर स्वीकार करना हमारे लिए हितकारी है। पिछले 30 वर्षों से मैं आगे और आप पीछे चलते रहे हैं बिना तर्क किए, उसी से मुझे प्रेरणा मिलती हैं। बैठक में आपने अपने संभागों और प्रांतों का जो ब्यौरा प्रस्तुत किया वह प्रशंसनीय है किंतु कुछ क्षेत्रों में कमजोरियां भी हैं। उन कमजोरियों को दूर करना है। ईश्वर की कृपा हम पर, संघ पर है। संघ एक अद्भुत जीवन प्रणाली है, एक जीवन दर्शन है। संघ में क्षत्रियों की बात है, लेकिन यह सभी के लिए कल्याणकारी है। पूज्य तन सिंह जी ने संघ के रूप में हमें जो मार्ग दिया है उसका कर्जा हम कई जन्मों में भी नहीं उतार सकते। इस कृतज्ञता का जब हमारे जीवन में आगमन हो जाएगा तो हमारा जीवन परिवर्तित हो जाएगा। तन सिंह जी कहते थे जो कृतज्ञ होना नहीं जानता वह मनुष्य ही नहीं है। मैं विनोद में भी आपसे निरर्थक बात नहीं करता, उस में भी सार्थकता होती है। यही मैंने देखा था और यही मैं कर रहा हूं। संघ का पूरा दर्शन मूलतः भारतीय दर्शन ही है। इस दर्शन को समझकर हमें अपने आचरण में लाना है। बैठक में सम्मिलित होने के लिए माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास भी जयपुर से सुरेंद्रनगर पहुंचे। उन्होंने प्रदेश के विभिन्न संभागों में हो रहे संघ कार्यों की जानकारी प्राप्त की व उपस्थित स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए कहा कि जब हम स्वयं सक्रिय होंगे तभी हमें समाज का भी सहयोग मिलेगा। संघ में जिनको जिम्मेदारी मिली हैं वे स्वयं सक्रिय होंगे तभी अन्य साथियों को भी प्रेरित कर सकेंगे। प्रांत प्रमुख हो, संभाग प्रमुख हो अथवा संघ प्रमुख हो - ये सभी दायित्व ही हैं और इन दायित्वों का पालन करते हुए हमारे में किसी भी प्रकार का अहंकार नहीं पनपना चाहिए। कर्तापन के भाव से बचते हुए हमें अपने दायित्व का निर्वहन करना है। जिनको प्रत्यक्ष दायित्व नहीं मिला है उनकी और भी अधिक जिम्मेदारी बनती है। उन्हें स्वयं सक्रियता पूर्वक कार्य करके दायित्वाधीन सहयोगियों को और अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करना है। 20 सितंबर को माननीय संरक्षक श्री ने बाड़मेर के लिए प्रस्थान किया व मार्ग में पालनपुर में स्वयसेवकों के साथ बैठक की।

मदनसिंह बामण्या को भ्रातृशोक

बजरंग सिंह

संघ के पू. राजस्थान संभाग के संभाग प्रमुख मदनसिंह बामण्या के छोटे भाई **बजरंग सिंह** का 52 वर्ष की उम्र में 8 सितंबर को देहावसान हो गया। उन्होंने स्वयं ने भी संघ के शिविर किए थे और पुत्रों ने भी शिविर कर रखे हैं। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देवें एवं परिजनों को इस आघात को सहने की क्षमता प्रदान करें।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री नारायण सिंह जी देवड़ा (देलदर)

भाजपा मण्डल अध्यक्ष

को

पंचायत समिति सिरोही,

जिला सिरोही के

उप प्रधान

निर्वाचित होने पर

हार्दिक बधाई एवं उज्वल

भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु:

महिपाल सिंह पुत्र श्री डूंगर सिंह जी देलदर (व्यवसाय, दुबई)	नरेंद्र सिंह पुत्र श्री मनोहर सिंह जी देलदर (श्री शांतिनाथ गारमेंट्स, मुम्बई)	श्रवण सिंह पुत्र श्री नारायण सिंह जी देलदर (व्यवसाय, बैंगलोर)	जितेंद्र सिंह पुत्र श्री फूलसिंह जी देलदर (व्यवसाय, सूरत)
गोपाल सिंह पुत्र श्री खेत सिंह जी देलदर (व्यवसाय, राजमंडरी, आंध्रा)	ठा. सा छैल सिंह जी देलदर, सिरोही	रघुवीर सिंह पुत्र श्री लादू सिंह जी देलदर हाल जोधपुर	देवेंद्र सिंह पुत्र श्री भंवरसिंह जी देलदर (व्यवसाय, मुम्बई)
कुँ. महिपाल सिंह पुत्र श्री ठा. ईश्वर सिंह जी देलदर (व्यवसाय, सूरत)	चंदन सिंह पुत्र श्री बलवंत सिंह जी देलदर (व्यवसाय, पिंडवाड़ा)	श्रीपाल सिंह पुत्र श्री डूंगर सिंह जी देलदर (व्यवसाय, दिल्ली)	पूरण सिंह पुत्र श्री गंगासिंह जी देलदर, सिरोही
कालू सिंह पुत्र श्री जोध सिंह जी देलदर (व्यवसाय, विशाखापत्तनम)	जितेंद्र सिंह पुत्र श्री गंगा सिंह जी देलदर (व्यवसाय, चेन्नई)	भंवर सिंह पुत्र श्री नरपत सिंह जी देलदर (व्यवसाय, जोधपुर)	गंगा सिंह पुत्र श्री रूप सिंह जी (माजीसा टूर्स एंड ट्रेवल्स, देलदर)
महावीर सिंह पुत्र श्री गणपत सिंह जी देलदर (व्यवसाय, नासिक)	जितेंद्र सिंह पुत्र श्री दीप सिंह जी देलदर (व्यवसाय, चेन्नई)	परबत सिंह पुत्र श्री नारायण सिंह जी देलदर (कुलदेवी मार्बल एंड ग्रेनाइट,बड़ौदा)	अभिमन्यु सिंह पुत्र श्री नारायण सिंह जी देलदर (आशापुरा कंस्ट्रक्शन , बरलूट)

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org